GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिन्दी पत्रकारिता : कला और संस्कृति का अंतर्संबंध

प्रो. (डॉ.) इंदु शर्मा 'सौरभ'

विभागाध्यक्षा - संगीत,

इलाहाबाद डिग्री कॉलेज - प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हिन्दी पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास और उसमें कला एवं संस्कृति के अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण करता है। हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप केवल सूचना-संग्रहण और प्रसारण की तकनीकी प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, कलात्मक अभिरुचि और बौद्धिक विमर्श की एक सशक्त, गतिशील एवं संरचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुआ है। पत्रकारिता की प्रकृति मूलतः सामाजिक यथार्थ के निरंतर परिवर्तित आयामों को अभिव्यक्त करने की होती है, और इस प्रक्रिया में कला तथा संस्कृति उसके अंतःस्थ प्राणतत्व के रूप में कार्य करते हैं। पत्रकारिता केवल सूचना के संप्रेषण का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक चेतना और कलात्मक अभिरुचि की संवाहक रही है। भारतेन्दु युग से लेकर समकालीन डिजिटल युग तक, हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने भाषाई परिष्कार, राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण और ललित कलाओं के संरक्षण में महती भूमिका निभाई है | भारतीय संदर्भ में, विशेषतः हिन्दी पत्रकारिता के विकासक्रम में, यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ केवल राजनीतिक या प्रशासनिक सूचनाओं के वाहक नहीं थे, बल्कि वे सांस्कृतिक संवाद, कलात्मक प्रस्तुति और सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख मंच भी थे।

यदि पत्रकारिता को "त्वरित इतिहास-लेखन" कहा जाता है, तो यह भी उतना ही सत्य है कि जब यह इतिहास कला और संस्कृति के संदर्भ में अभिव्यक्त होता है, तब वह समाज की सौंदर्यात्मक संवेदना, सांस्कृतिक मूल्यों और सामूहिक स्मृति का प्रामाणिक दस्तावेज बन जाता है। हिन्दी भाषी समाज में पत्रकारिता ने न केवल जनमत के निर्माण में योगदान दिया, बल्कि उसने सांस्कृतिक अस्मिता के निर्माण, संरक्षण और पुनर्सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शोध में 'धर्मयुग', 'दिनमान' और 'नया ज्ञानोदय' जैसी पत्रिकाओं के योगदान के माध्यम से यह रेखांकित किया गया है कि किस प्रकार पत्रकारिता ने कला आलोचना के प्रतिमान स्थापित किए और वैश्वीकरण के दौर में इसके समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का सामना किया। इस अध्ययन में ऐतिहासिक,

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों का उपयोग करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि हिन्दी पत्रकारिता ने भारतीय कला और संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन तथा पुनर्सृजन में केंद्रीय भूमिका निभाई है।

बीज शब्द: *हिन्दी पत्रकारिता, सांस्कृतिक चेतना, कला आलोचना, भारतेन्दु युग, धर्मयुग, वैश्वीकरण, ललित कला, भाषाई अस्मिता।*

1. प्रस्तावना : पत्रकारिता और संस्कृति का दार्शनिक आधार

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव केवल एक तकनीकी घटना मात्र नहीं थी, बल्कि यह भारतीय नवजागरण की एक गतिशील अभिव्यक्ति थी। पत्रकारिता का मूल स्वभाव मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक परिवर्तनों को शब्दबद्ध करना है, जिसमें कला और संस्कृति उसके प्राणतत्व के रूप में विद्यमान रहते हैं । पत्रकारिता को प्रायः "जल्दी में लिखा गया इतिहास" कहा जाता है, और जब यह इतिहास कला और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में अंकित किया जाता है, तो यह समाज के शाश्वत मूल्यों के प्रति निष्ठा और उसकी सौंदर्यात्मक दृष्टि को मुखरित करता है ।

भारतीय संदर्भ में, विशेषकर हिन्दी भाषी अंचलों में, पत्रकारिता ने लोक जागरण और राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। जहाँ ललित कलाएँ और सांस्कृतिक विरासत राष्ट्रीयता के अभिन्न अंग बनकर उभरे हैं, वहीं पत्रकारिता ने उन्हें जनसामान्य की 'चित्तवृत्ति' का हिस्सा बनाया है । संस्कृति और पत्रकारिता के इस अंतर्संबंध को समझने के लिए हमें उस 'सार्वजनिक क्षेत्र' का विश्लेषण करना होगा, जहाँ विचार और कलात्मक विमर्श आपस में टकराते हैं और समाज को नई दिशा देते हैं ।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : संघर्ष और भाषाई अस्मिता का उदय (1826-1867)

हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभ 30 मई, 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित 'उदन्त मार्त्तण्ड' से माना जाता है। यह वह समय था जब हिन्दी अपनी भाषाई पहचान के लिए संघर्ष कर रही थी। इस प्रारंभिक चरण में पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक सत्ता के अन्याय के विरुद्ध जनमत का निर्माण करना और भारतीय समाज में आत्म-गौरव का संचार करना था।

प्रारंभिक दौर में 'बनारस अखबार' (1845), 'मार्त्तण्ड' (1846), और 'प्रजा हितैषी' (1861) जैसे पत्रों ने हिन्दी गद्य के स्वरूप को स्थिर करने के साथ-साथ सामाजिक सुधारों की आधारशिला रखी । इस कालखंड की पत्रकारिता में धर्म, दर्शन और नैतिकता का एक ऐसा त्रिकोणीय संगम मिलता है, जो भारतीय संस्कृति के पुनर्निर्माण की दिशा में एक अपरिहार्य कदम था।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

3. भारतेन्दु युग : सांस्कृतिक पुनर्जागरण और कलात्मक नवोन्मेष (1867-1900)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिन्दी पत्रकारिता के 'निर्माण युग' का वास्तविक पुरोधा स्वीकार किया जाता है । उन्होंने 1867 में काशी से 'कविवचन सुधा' और तदुपरान्त 'हरिश्चंद्र मैगजीन' के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता को एक सर्वांगीण और अभिनव आयाम प्रदान किया। भारतेन्दु की पत्रकारिता केवल समाचार प्रदाता यंत्र नहीं थी, बल्कि वह कला, साहित्य और संस्कृति का एक सजीव मंच थी।

भारतेन्दु युग की पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताएँ:

- **भाषाई परिष्कार:** हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले-पहल 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' में ही प्रकट हुआ, जिसे जनता ने अपनी विभूति समझकर अपनाया।
- **सामाजिक और नारी विमर्श:** 'बाला बोधिनी' जैसी पत्रिकाओं ने नारी शिक्षा और उनके सांस्कृतिक अधिकारों की वकालत की, जो उस समय के पितृसत्तात्मक समाज में एक क्रांतिकारी कदम था ।
- **कला और रंगमंच:** भारतेन्दु ने स्वयं नाटकों और लोक कलाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का संप्रेषण किया। उनकी पत्रकारिता में संगीत और शिल्प पर लेखों ने एक ऐसी 'सांस्कृतिक वैचारिकी' का निर्माण किया, जिसने आगे चलकर स्वाधीनता संग्राम के लिए मनोवैज्ञानिक आधार तैयार किया।

4. द्विवेदी युग : अनुशासन, नैतिकता और मानकीकरण (1900-1920)

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में 'सरस्वती' (1900) का प्रकाशन हिन्दी पत्रकारिता और संस्कृति के इतिहास में एक युगान्तकारी घटना थी । द्विवेदी जी ने न केवल हिन्दी भाषा का व्याकरणिक परिष्कार किया, बल्कि कला और साहित्य के प्रति एक अनुशासित, तर्कसंगत और मर्यादित दृष्टिकोण भी विकसित किया।

द्विवेदी युगीन पत्रकारिता ने कला समीक्षा के नए प्रतिमान स्थापित किए। जहाँ भारतेन्दु युग में भावुकता प्रधान थी, वहीं द्विवेदी युग में 'वस्तुनिष्ठता' और 'शास्त्रीयता' को महत्व दिया गया। इस युग में 'सरस्वती' के अलावा 'प्रभा', 'सुदर्शन' और 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' ने भारतीय इतिहास, पुरातत्व और चित्रकला पर शोधपरक लेख प्रकाशित कर भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की।

5. स्वाधीनता आंदोलन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (1921-1947)

1921 के पश्चात महात्मा गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन के तीव्र होने के साथ ही पत्रकारिता ने 'मिशन' का रूप धारण कर लिया। 'प्रताप', 'कर्मवीर', 'आज' और 'मतवाला' जैसे पत्रों ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनी

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

लेखनी का आधार बनाया। इस कालखंड में पत्रकारिता का मूल उद्देश्य देश की अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना और औपनिवेशिक संस्कृति के बरक्स स्वदेशी कला और मूल्यों को प्रतिष्ठित करना था।

प्रेमचंद के संपादन में 'हंस' (1930) ने यथार्थवादी कला दृष्टि को बढ़ावा दिया। प्रेमचंद ने साहित्य और पत्रकारिता को 'राजा-रानी' के आख्यानों से बाहर निकालकर 'होरी' और 'हलकू' जैसे जनसामान्य के पात्रों से जोड़ा, जो भारतीय संस्कृति के वास्तविक प्रतिनिधि थे।

6. स्वातंत्र्योत्तर स्वर्ण युग : 'धर्मयुग' और 'दिनमान' का योगदान

1947 के पश्चात हिन्दी पत्रकारिता में एक अभूतपूर्व बौद्धिक विस्तार हुआ। अब लक्ष्य केवल स्वतंत्रता नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत की सांस्कृतिक अस्मिता का निर्माण था ।

6.1. डॉ. धर्मवीर भारती और 'धर्मयुग' (1960-1987)

डॉ. धर्मवीर भारती के संपादन में 'धर्मयुग' सांस्कृतिक पत्रकारिता की एक किंवदंती बन गई। भारती जी ने पत्रकारिता को एक 'कलात्मक सेवा कार्य' के रूप में परिभाषित किया, जहाँ धर्म, राजनीति, साहित्य, फिल्म, संगीत और ललित कलाओं का अद्भुत संतुलन था।

- **कला वीथी:** 'धर्मयुग' ने 1968 से 'चित्र वीथी' स्तंभ के माध्यम से एम.एफ. हुसेन जैसे प्रतिष्ठित चित्रकारों के रंगीन चित्रों और उनकी समीक्षाओं को जन-सामान्य तक पहुँचाया।
- **संगीत और संस्कृति:** शास्त्रीय संगीत और लोक संस्कृतियों पर विस्तृत सचित्र लेखों ने भारतीय मध्यम वर्ग की कलात्मक अभिरुचि का परिष्कार किया।

6.2. अज्ञेय और 'दिनमान' की बौद्धिक क्रांति

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने 'दिनमान' के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता में 'आधुनिकता' और 'बौद्धिक यथार्थवाद' का समावेश किया। अज्ञेय का मानना था कि संस्कृति और मूल्य परस्पर अविभाज्य हैं ।

- **भाषाई नवाचार:** उन्होंने 'मस्क्वा' (मास्को) और 'कुंतल' (क्विंटल) जैसे शब्दों के माध्यम से वर्तनी और उच्चारण की शुद्धता पर बल दिया, जो भाषाई संस्कृति का हिस्सा बना।
- **कला आलोचना:** 'दिनमान' ने गंभीर कला आलोचना और सांस्कृतिक रिपोर्टिंग को वह स्थान प्रदान किया, जो इससे पूर्व केवल अंग्रेजी पत्रकारिता तक सीमित था।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

7. ललित कलाओं और पत्रकारिता का अंतर्संबंध : एक विश्लेषण

हिन्दी पत्रकारिता ने ललित कलाओं (Fine Arts) के लोकतंत्रीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 19वीं शताब्दी के अंत में राजा रवि वर्मा के लिथोग्राफी प्रेस ने पौराणिक चित्रों को जन-जन तक पहुँचाया, जिसमें तत्कालीन पत्रिकाओं की व्याख्यात्मक भूमिका महत्वपूर्ण थी ।

कला और पत्रकारिता के इस प्रभाव को निम्नलिखित मॉडल द्वारा समझा जा सकता है:

$$S_{impact} = \int_{t_1}^{t_2} (V_{journalism} \cdot A_{aesthetic} + C_{culture}) dt$$

जहाँ S_{impact} सामाजिक प्रभाव है, $V_{journalism}$ पत्रकारिता की वैचारिकी है, $A_{aesthetic}$ कलात्मक सौंदर्यबोध है, और $C_{culture}$ सांस्कृतिक संचरण है ।

कला का प्रकार	*पत्रकारिता का हस्तक्षेप*	*प्रमुख पत्रिकाएँ*	*सांस्कृतिक प्रभाव*
चित्रकला	रंगीन चित्रों का प्रकाशन और समीक्षा	धर्मयुग, नया ज्ञानोदय	आधुनिक चित्रकला की जन-स्वीकृति [19]
संगीत	घरानों का परिचय और शास्त्रीय चर्चा	सरस्वती, छाया	संगीत का संस्थागत संरक्षण
रंगमंच	नाटकों की समीक्षा और विधा का विकास	कविवचन सुधा, नटरंग	सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार
लोक कला	आंचलिक बोलियों और गीतों का संकलन	रविवार, इतवारी	क्षेत्रीय अस्मिता की पहचान

8. 'नया ज्ञानोदय' और समकालीन कला आलोचना के प्रतिमान

वर्तमान में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित 'नया ज्ञानोदय' हिन्दी की एक अग्रणी साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका है, जो कला और साहित्य के अंतर्संबंधों को नवीन संदर्भों में पुनर्परिभाषित कर रही है । यह पत्रिका न केवल आधुनिक चित्रकला (घनवाद, अभिव्यक्तिवाद) पर गंभीर विमर्श करती है, बल्कि दलित विमर्श, स्त्री अस्मिता और आदिवासी चेतना जैसे ज्वलंत विषयों को भी कला के माध्यम से स्वर प्रदान करती है । 'नया ज्ञानोदय' ने

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

यह सिद्ध किया है कि पत्रकारिता का एक मुख्य स्वरूप 'परिवेश से साक्षात्कार' कराना और समाज की 'चित्तवृत्ति' को सांस्कृतिक आधार प्रदान करना है।

9. वैश्वीकरण, डिजिटल क्रांति और सांस्कृतिक चुनौतियाँ

21वीं शताब्दी में सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण ने पत्रकारिता के स्वरूप को आमूल-चूल बदल दिया है। जहाँ इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हिन्दी पत्रकारिता को वैश्विक पहुँच प्रदान की है, वहीं इसके समक्ष कुछ गंभीर सांस्कृतिक संकट भी उत्पन्न हुए हैं ।

9.1. सकारात्मक प्रभाव

- **वैश्विक प्रसार:** आज हिन्दी की ई-पत्रिकाएँ 90 से अधिक देशों में पढ़ी जा रही हैं, जिससे भारतीय संस्कृति का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार हो रहा है ।
- **नूतन माध्यम:** ब्लॉग, पॉडकास्ट और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लोक कलाओं और उपेक्षित विधाओं को नया जीवन दिया है ।

9.2. नकारात्मक प्रवृत्तियाँ

- **भाषाई संकरता (Hinglish):** बाजारवाद के प्रभाव में हिन्दी भाषा में अंग्रेजी का अनियंत्रित मिश्रण बढ़ा है, जिससे भाषा का सांस्कृतिक सौष्ठव कम हुआ है ।
- **बाजारीकरण और सतहीपन:** पत्रकारिता अब 'मिशन' से 'बिजनेस' की ओर मुड़ गई है, जहाँ टीआरपी और व्यावसायिक लाभ के चक्कर में गंभीर कला आलोचना और सांस्कृतिक रिपोर्टिंग हाशिए पर चली गई है।
- **विश्वसनीयता का संकट:** 'कट-कॉपी-पेस्ट' की संस्कृति और 'इंस्टेंट' समाचारों की दौड़ ने पत्रकारिता की मौलिकता और गहराई को प्रभावित किया है ।

10. निष्कर्ष और भविष्यगामी दृष्टि

हिन्दी पत्रकारिता, कला और संस्कृति का अंतर्संबंध भारतीय समाज की आत्मा का प्रतिबिंब है। 1826 से प्रारंभ हुई यह यात्रा आज एक ऐसे मुकाम पर है जहाँ तकनीक और परंपरा का द्वंद्व चरम पर है। भारतेन्दु की क्रांतिकारी चेतना, द्विवेदी जी का अनुशासन और भारती एवं अज्ञेय की बौद्धिक गहराई ने जिस समृद्ध विरासत का निर्माण किया, उसे सुरक्षित रखना समकालीन पत्रकारों का महत्तर दायित्व है ।

भविष्य की पत्रकारिता को यदि अपनी प्रासंगिक साख बचाए रखनी है, तो उसे बाजारीकरण के दबावों के बीच भी 'लोकमंगल' की भावना और कलात्मक गरिमा को प्राथमिकता देनी होगी। सांस्कृतिक पत्रकारिता केवल

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि वह समाज को 'मर्यादा' और 'संस्कार' देने वाली एक शैक्षणिक शक्ति है । यदि हम अपनी भाषाई शुद्धता और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहते हैं, तो हिन्दी पत्रकारिता न केवल सूचना का माध्यम बनी रहेगी, बल्कि एक गौरवशाली और कलात्मक भविष्य के निर्माण का आधार भी सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची

- अज्ञेय, स. ही. वा. (2014). *संस्कृति और मूल्य*. दिल्ली: राजपाल एंड संस.
- द्विवेदी, म. प्र. (1993). *हिन्दी की अनस्थिरता: एक ऐतिहासिक बहस* (संपादक: भारत यायावर). दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
- भटनागर, र. (2003). *द राइज एंड ग्रोथ ऑफ़ हिंदी जर्नलिज्म*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- मिश्र, क. बी. (2012). *हिन्दी पत्रकारिता: जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि*. कोलकाता: बंगवासी मॉर्निंग कॉलेज प्रकाशन.
- Chatterjee, N., & Kundu, D. (2025). Role of media in preservation and promotion of ancient Indian knowledge systems in the present society. *ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication*, 1(2), 43–51.
- Mandhwani, A. (2024). *Everyday reading: Middlebrow magazines and book publishing in post-independence India*. Oxford University Press.
- Nijhawan, S. (2012). *Women and girls in the Hindi public sphere (1920-1940)*. Oxford University Press.
- Orsini, F. (2002). *The Hindi public sphere 1920–1940: Language and literature in the age of nationalism*. Oxford University Press.
- Pathak, T., & Das, S. (2024). Cultural heritage preservation in India: Safeguarding a living legacy. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts*, 5(1), 1286–1291. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.4184
- Rai, D. K., & Jaiswal, H. S. (2023). Development of Press Trust of India from print to digital age: Historical perspective. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts*, 4(2), 1293–1303.
- Verma, K. (2024). Hindi language: A bridge between cultural heritage and society. *Maharshi Journal of Language and Literature*, 4(1), 15–21.